B.A. III Paper VIII
M.A JOHN

मानव शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र

शारीरिक रूप से मानव और पशु में अनेक समानताएँ पायी जाती हैं। परन्तु प्रकृति ने मनुष्य को सोचने समझने की क्षमता प्रदान की है जो पशुओं में नहीं पायी जाती है। मानव को प्रकृति ने reasoning capacity प्रदान की है जिसके आधार पर उसने शरीर के विभिन्न अंगों को उपयोग में लाकर अपनी संस्कृति तथा समाज का निर्माण किया है। जानवरों के पास न संस्कृति होती है और न ही समाज। प्रकृति ने मनुष्य को देखने, सुनने, बोलने, दो पैरों पर खड़े होने तथा दो आजाद हाथ प्रदान किये हैं। दो पैरों पर खड़े होने के कारण इसके दोनों हाथ आजाद हो गये और अपने इन्हीं आजाद हाथ तथा उंगलियों की सहायता से इसने सांस्कृतिक वातावरण से सामंजस्य प्राप्त करने के क्रम में विभिन्न भौतिक तथा मानसिक क्षमताओं के कारण अलौकिक वस्तुओं का निर्माण किया है। इसी को संस्कृति कहते हैं। इसने अनेक औजारों का आविष्कार किया, आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया। भाषा को विकसित किया और इसके माध्यम से विचारों का आदान प्रदान करने लगा। मानव समाज की स्थापना के साथ ही सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी आरम्भ हो गयी और इसी के साथ मानव संस्कृति में भी विकास होता रहा अर्थात विज्ञान तथा तकनीकी के विकास के साथ संस्कृति में नये तत्व सम्मिलित होते

Scanned with CamScanner

रहे तथा अनुपयोगी तत्वों को त्यागने का कार्य भी चलता रहा। समाज में अनुभव, खोज और आविष्कार मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते रहे और प्रत्येक पीढ़ी उनमें कुछ न कुछ सुधार करती रही। इन्हीं सब बातों का अध्ययन मानवशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

मानवशास्त्र मानव का समग्र रूप में अध्ययन करता है। यह देश और काल की सीमाओं में अपने आपको नहीं बाँधता है। यह शास्त्र इस बात में रुचि रखता है कि मानव की उत्पत्ति कैसे हुई तथा उसमें पशु से भिन्न प्रकार की शारीरिक विशेषतायें कैसे विकसित हुईं। धीरे धीरे मनुष्य में शारीरिक भेद कैसे और क्यों उत्पन्न होते गये जिनके आधार पर विभिन्न प्रजातियों का विकास हुआ। मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है।

प्रथम — मानव की उत्पत्ति और उद्विकास, उसकी शारीरिक बनावट और शारीरिक भेद, मानव और पशु में पाये जाने वाले शारीरिक अन्तर, विभिन्न प्रजातियों की शारीरिक भेद, विशेषतायें, प्रजातिय मिश्रण, उनमें पायी जाने वाली समानताओं एवं विभिन्नताओं का विश्लेषण एवं वर्गीकरण, आदि का अध्ययन मानव शास्त्र के क्षेत्र में आता है।

द्वितीय विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक संगठनों व संस्थाओं का उद्भव तथा उद्विकास का अध्ययन भी मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में आता है। आदिमानव की अर्थव्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था और सामाजिक

Scanned with CamScanner

समाजिक व्यवस्था का अध्ययन भी मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित है। मानवशास्त्र विवाह, परिवार, नातेदारी, धर्म, जादू ज्ञान विज्ञान, भाषा, कला, संगीत, साहित्य आदि के ऐतिहासिक अध्ययन में भी अपनी रुचि रखता है।

इस प्रकार मानवशास्त्र में मानव का समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है। मानवशास्त्र मानव के शारीरिक, समाजिक और सांस्कृतिक ऐतिहास का अध्ययन करता है।

— x —

Scanned with CamScanner